लड़नी होगी आतंक से निर्णायक जंग

आतंकवादी ताकत के रूप में उभर चुकी हैं अलकायदा प्रेरित जेहादी तंजीमें

आतंकवाद

प्रभात कुमार रॉय

पाकिस्तान के एबटाबाद इलाके में ओसामा बिन लादेन को मार गिराए जाने के अमेरिकी ऐलान ने उन तमाम मुल्कों को कुछ राहत प्रदान की, जो कि अलकायदा के अहम निशाने पर रहे हैं। राहत की बात यह है कि समूची दुनिया में जेहादी आतंकवाद का कहर बरपाने वाले संगठन अलकायदा के सरगना ओसामा बिन लादेन की मौत से जेहादी आतंकवादियों के हौसलों को निर्णायक क्षति पंहुचेगी। लादेन के खात्मे के लिए जिम्मेदार सीआईए द्वारा संचालित ऑपरेशन में पाकिस्तान सरकार को अमेरिका द्वारा विश्वास में नहीं लिया गया। विस्मय की बात है कि पाकिस्तान के एबटाबाद इलाके में फौजी एकेडमी के निकट ही ओसामा बिन लादेन ने अपने छुपने का ठिकाना बनाया और पाक हुकूमत दावा करती रही कि उसे अलकायदा से कोई सरोकार नहीं रहा। अलकायदा से प्रेरित जेहादी तंजीमे और उनके सरगना स्वयं में ही एक जबरदस्त आतंकवादी ताकत के तौर पर उभर चुकी हैं।

हाल ही में अलकायदा के प्रवक्ता ने बयान जारी किया है कि वाशिंगटन, मास्को, तेलअबीब और दिल्ली उसके सबसे अहम निशाने हैं। अलकायदा के बयान में भारत पर यह आरोप लगाया गया है कि उसने अमेरिका की सक्रिय मदद से कश्मीर में एक लाख से ज्यादा मुसलमानों को मौत के घाट उतार दिया और यह सिलसिला अब भी जारी है। यह बयान अलकायदा के नए प्रवक्ता आजम अल अमेरिकी ने जारी किया, जो कि मूलतः एक अमेरिकी नागरिक है और लादेन के अलकायदा गिरोह का एक खतरनाक सरगना बनकर उभरा है। अलकायदा ने अपने बयान में आगे कहा है कि सबसे पहले उसका मकसद भारत के कब्जे से कश्मीर में को आजाद कराना है। इसके बाद वह हैदराबाद और जूनागढ़ को मुक्त कराना है। अलकायदा के प्रवक्ता का कथन है कि भारत पाकिस्तान और बंग्लादेश की कुल आबादी का 45 फीसदी हिस्सा मुसलमानों का है। अलकायदा भारतीय उपमहाद्वीप में एक इस्लामिक राज्य की स्थापना करना चाहता है, जिसमे कि उपमहाद्वीप के सारी मुस्लिम आबादी शामिल हो। वस्तुतः भारत के लिए तो अलकायदा कश्मीर विद्रोह के प्रारम्भिक काल से ही एक खूंखार चुनौती रहा है। आईएसआई और अलकायदा ने संयुक्त तौर पर 1987 के बाद से ही पाक अधिकृत कश्मीर में कश्मीर बगावत की सरगना तंजीम जेकेएलएफ के छापामारों को गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण प्रदान किया था। कश्मीर के बागियों को दिमागी तौर पर जेहाद के लिए तैयार करने का काम भी आईएसआई ने अलकायदा के सरगनाओं को ही सौंपा था, क्योंकि उनके पास सोवियत रूस के साथ गुरिल्ला युद्ध का लड़ने का एक दीर्घ अनुभव था। कश्मीर के विद्रोह पर अलकायदा की जबरदस्त पकड़ के कारण ही पाक इंटैलीजैंस आईएसआई ने कश्मीर विद्रोह में जेकेएलएफ को एकदम ही दरकिनार कर दिया गया, क्योंकि जेकेएलएफ ने अलकायदा के जेहादी फलसफे और कश्मीर के पाकिस्तान के विलय के विचार को स्वीकार करने से स्पष्ट इंकार कर दिया। जेकेएलएफ कश्मीर की कथित आजादी के अपने मकसद और कथित सैकुलर डैमोक्रेटिक दर्शन का परित्याग करने के लिए तत्पर नहीं हुआ। परिणामस्वरूप जेकेएलएफ को कश्मीर विद्रोह की नेतृत्वकारी स्थिति से दरकिनार कर दिया गया और हिजबुल मुजाहिदीन को कश्मीर बगावत में नेतृत्वकारी भूमिका सौंपी गई, जोकि अभी तक प्रभावशाली रूप से बाकायदा कायम है। अलकायदा की प्रेरक शक्ति वहाबी संप्रदाय रहा। वस्तुतः वहाबी संप्रदाय का आगाज सउदी अरब में सन् 1933 में हुआ। वहाबी संप्रदाय ने इस्लाम मजहब के मानने वालो को मजहबी कट्टरता की ओर प्रेरित करने का जबरदस्त प्रयास किया। सन् 1988 में बिन लादेन ने सोवियत-अफगान युद्ध के दौरान पाकिस्तान और अमेरिकी सरकारों की मदद से अलकायदा की बुनियाद रखी। अमेरिकी सरकार और उसकी सहयोगी सउदी अरब सरकार ने अलकायदा को विशाल धनराशि मुहैया कराई, जिसके दम पर अलकायदा ने इस युद्ध के लिए विश्व के बहुत से मुस्लिम देशों से नौजवानों को भर्ती करना शुरू किया। वहाबी संप्रदाय के दुनिया भर में फैले इस्लामिक मदरसों ने भी बिन लादेन को बहुत बड़ी तादाद में छापामार जेहादी उपलब्ध कराए।

सोवियत-अफगान युद्ध के समापन के पश्चात अलकायदा की दुश्मनी अपनी सबसें बड़ी पालक-पोषक ताकत अमेरिका से हो गई। सन् 2002 के बाद भारत के साथ अमेरिका सहयोगी भूमिका में अवतरित हुआ। कश्मीर के सवाल पर भी किसी हद तक अमेरिका के नजरिए में बुनियादी बदलाव आया। अब तो बिन लादेन भारत का और भी ज्यादा दुश्मन बन गया। कश्मीर के बाहर भी अलकायदा ने भारत में अपने नेटवर्क को जबरदस्त रूप से विस्तार प्रदान किया। सबसे पहले मुंबई को 1993 में जेहादियों ने अपना खूनी निशाना बनाया। फिर दिल्ली पर जेहादियों ने अपना निशाना साधा। भारतीय संसद पर आतंकवादी हमला हुआ। दिल्ली के बाजारों में भयानक बम विस्फोट अंजाम दिए गए। कोयम्बटूर, बेंगलुरू, गांधीनगर अहमदाबाद, कोलकाता, वाराणसी, हैदराबाद आदि शहर जेहादियों के निशाने पर रहे हैं। यदि केवल विगत तीन वर्षो का ही लेखा जोखा देखें तो भारत में तकरीबन तीन हजार आतंकवादी आक्रमण हुए जिसमे कि हजारों की संख्या में बेगुनाह नागरिकों को अपनी जिंदगी को कुर्बान करनी पड़ी।

अलकायदा ने खुलकर भारत सरकार को सदैव सीधे चुनौती दी। क्या भारत सरकार इस चुनौती को संजीदगी के साथ स्वीकार करने के लिए तत्पर है। लचर कमजोर खुफिया तंत्र को बेहद कारगर बनाने की कोई राजनीतिक इच्छा शक्ति हुकूमत के पास नहीं है। आतंकवादी गिरोहों की कारगुजारियों से निपटने का सबसे कारगर तंत्र, सिर्फ खुफिया तंत्र ही है। दुर्भाग्यवश हमारी सभी सुरक्षा एजेन्सियों में खुफिया एजेन्सियां सबसे कमजोर कड़ी है। देश के सबसे काबिल पुलिस अधिकारियों को खुफिया एजेन्सियों में तैनात किया जाना चाहिए, जबकि व्यवहार में इसका बिल्कुल उलट ही होता रहा। 19 वीं सदी की पुलिस प्रशासनिक व्यवस्था के बलबूते पर 21 वीं सदी के आतंकवादियों का आखिरकार कैसे सफाया किया जा सकता है! ओसामा बिन लादेन के मारे जाने से अलकायदा के मनोबल पर तो प्रभाव पड़ेगा किंतु भौतिक शक्ति पर अधिक असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि जहरीली जेहादी विचारधारा ने विश्व भर में अनेकानेक ओसामा बिन लादेन उत्पन्न कर दिए हैं। इसकी दरकार है कि जहरीली जेहादी विचारधारा से भी निर्णायक जंग की जाए।

(लेखक पूर्व प्रशासनिक अधिकारी है)

Reproduced by www.hobbyshobby.com with author's permission